खाएसि फल अरू बिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ।।
सुनि रावन पठए भट नाना । तिन्हहि देख गर्जेउ हनुमाना ।।
सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ।।
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ।।
आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ।।

दो०-कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि।। 18 ।।

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलवाना ।।
मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ।।
चला इंद्रजीत अतुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ।।
कपि देखा दारून भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरू धावा ।।
अति बिसाल तरू एक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ।।
रहे महाभट ताके संगा । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ।।
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ।।
मुठिका मारि चढा तरू जाई । ताहि एक छन मुरूछा आई ।।
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजन जाया ।।

दो०-ब्रह्म अस्त्र तेहिं साधाँ कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार।। 19 ।।

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहि मारा । परतिहुँ बार कटकु संघारा ।।
तेही देखा कपि मुरूछित भयऊ । नागपास बाँधेसि लै गयऊ ।।
जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भव बंधन काटहिं नर ग्यानी ।।
तासु दूत कि बंध तरू आवा । प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा ।।
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए । कौतुक लागि सभाँ सब आएँ ।।
दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ।।
कर जोरि सुर दिसिप बिनीता । भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ।।
देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुँ गरूड़ असंका ।।

दो०-कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद।
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद।। 20 ।।

कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहि कें बल घालेहि बन खीसा ।।
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही । देखउँ अति असंक सठ तोही ।।
मारे निसिचर केहिं अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा ।।
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । पाइ जासु बल बिरचति माया ।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान